सारांश खुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि, स्थान मस्जिद मुबारक,यू.के. बयान फर्मूदः 23 मई 2025

मक्का पर विजय के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान तथा आदरणीय डाक्टर शैख़ महम्मूद साहब का सदवर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail- ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-23.05.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्ब: में मैंने एक मुसलमान का एक व्यक्ति के सलाम कहने के बावजूद उसकी हत्या का वर्णन किया था और इस हवाले से सूरः निसा की आयत पढ़ी थी, जिसमें कहा गया है कि यदि तुम्हें कोई सलाम कहे तो यह ना कहो कि वह मोमिन नहीं, इसके विस्तृत विवरण में भी यही है कि आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न केवल इससे रोका बल्कि ऐसा करने वाले पर अति क्रोधित भी हुए और उसे अपनी नज़रों से दूर कर दिया और कुछ रिवायतों के अनुसार आप स. ने उसके विरुद्ध दुआ भी की, आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसका बड़ा खेद था। अतएव आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे बड़ा घृणित कृत्य फ़रमाया था। काश! आजकल पाकिस्तान के तथाकथित मुल्लां, दीन के ठेकेदार, इन्हें भी यह बात समझ आ जाए और अहमदियों पर जो अत्याचार कर रहे हैं, उससे बाज़ आ जाएं ताकि अल्लाह तआला की पकड़ से बच सकें।

अब युद्धों के वर्णन के अंतर्गत मक्का पर विजय वाले युद्ध का वर्णन होगा जो रमज़ान 8 हिजरी में हुआ, इसे महान विजय भी कहते हैं। इसकी शुभ सूचना अल्लाह तआला ने आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहले ही दे दी थी जिसके परिणाम स्वरूप लोगों के झुण्ड के झुण्ड इस्लाम में

दाख़िल हुए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. आयत قُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ..... के संदर्भ में फ़रमाते हैं कि यह वह आयत है जो हिजरत से पहले सूरः बनी इस्राईल में आप स. पर नाज़िल हुई थी और जिस में हिजरत तथा फिर मक्का पर विजय पाने की शुभ सूचना दी गई थी।

सूरः फ़तह में मक्के पर विजय की शुभ सूचना इस प्रकार बयान हुई है कि- لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِیْبًا निश्चित ही अल्लाह मोमिनों से प्रसन्न हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तेरी बेअत कर रहे थे, वह जानता है जो उनके दिलों में था, अतः उसने उन पर धैर्य उतारा और एक विजय प्रदान की।

वास्तव में जिस दिन आंहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के से हिजरत की, अल्लाह तआला ने उसी दिन आप स. को विजय की शुभ सूचना दे दी थी। अतः हिजरत के समय इस आयत के नाज़िल होने का भी वर्णन मिलता है कि- اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ (अल-क़सस-86) अर्थात वह जिसने तुझ पर क़ुरआन को अनिवार्य किया है, एक दिन अवश्य तुझे वापस आने की जगह वापस ले आएगा। इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी कहते हैं कि इस जगह वापस आने की जगह का तात्पर्य मक्का है।

सूर: बक़र: की एक आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَمِنْ حَیْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ। अर्थात- (ऐ मुसलमानो) तुम्हारा एक ही उद्देश्य होना चाहिए कि तुमने ख़ाना ए काबा पर विजय पाकर उसे इस्लाम का केंद्र बनाना है, क्यूंकि जब तक मक्का में इस्लाम फैल नहीं जाता, जब तक मक्का मुसलमानों के आधीन नहीं आ जाता, उस समय तक शेष पूरा अरब देश मुसलमान नहीं हो सकता, यह प्रोग्राम था जो मुसलमानों के लिए निश्चित किया गया।

तत्पश्चात् हुज़ूरे अनवर ने एक शहीद का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए फ़रमाया कि इस समय मैं एक शहीद का वर्णन करूंगा। यह विवरण मुकर्रम डा. शैख़ मुहम्मद महमूद साहब आफ़ सरगोधा सुपुत्र श्री शैख़ मुबश्शिर अहमद साहब दहलवी का है जिन्हें एक अहमदिय्यत के विरोधी ने 16 मई को फ़ायरिंग करके शहीद कर दिया था, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन।

घटना वाले दिन डाक्टर साहब जुमः की नमाज़ अदा करने के बाद अपने परिवार के साथ सरगोधा के हस्पताल, जहाँ वे प्रेक्टिस करते थे, पहुंचे तो राहदारी में एक व्यक्ति जो वहाँ पहले से मौजूद था, उसने शार्पिंग बैग से पिस्तौल निकला और पीछे से आप पर फायरिंग कर दी। उन्हें तुरंत सिविल हस्पताल ले जाया गया परन्तु घोर ज़ख्मों के कारण डाक्टर साहब शहीद हो गए। इस घटना के बाद आक्रमणकारी अपने हथियार को लहराते हुए अपने साथी के साथ वहाँ से निकल भागा। शहादत के समय शहीद मरहूम की आयु 59 वर्ष थी।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदिय्यत उनके पड़ दादा मुकर्रम बाबू एजाज़ हुसैन साहब के

भाई हज़रत सरफ़राज़ हुसैन साहब दहलवी रज़ी. के माध्यम से आई थी, जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलै. की बेअत की थी। बाद में शहीद मरहूम के पड़ दादा मुकर्रम बाबू एजाज़ हुसैन साहब ने अपने भाई के माध्यम से बेअत कर ली। शहीद मरहूम ने एफ़ सी. कालिज लाहौर से एफ़. एस. सी. की, फिर रावलपिंडी मेडिकल कालिज से 1990 में एम.बी.बी.एस. किया, उसके बाद पंजाब सर्विस कमीशन की परीक्षा पास की और चार साल सर्विसिज़ हस्पताल और जिनाह हस्पताल में सेवा की। 1998 में रायल कालिज आफ़ फिजीशियंज़ यू.के. की सदस्यता की, और 2021 में फ़ेलोशिप की उपाधि मिली।

शहीद मरहूम 2001 में सरगोधा आ गए, आप सरगोधा के पहले जिगर एवं पेट रोग के विशेषज्ञ थे। 2001 में सरगोधा आने के बाद नियमबद्धता से फ़जले उमर हस्पताल में भी विज़िटिंग डाक्टर के रूप में सेवा दे रहे थे। अल्लाह तआला ने उनके हाथ में शिफ़ा रखी थी। संसारिक ज्ञान के साथ दीन का ज्ञान भी बहुत था। क़ुरआन करीम की तफ़सीर, तज़किरा, रूहानी ख़ज़ायन एवं अन्य जमाअती पुस्तकें और मतभेद पर आधारित पुस्तकों का भी घोर अध्ययन था। शहीद मरहूम को नायब अमीर ज़िला सरगोधा के रूप में भी सेवा का अवसर मिला। मेडिकल एसोसिएशन की स्थापना के बाद उसके सदस्य बने, 2024 से एसोसिएशन के नायब सद्र थे, इसी तरह सरगोधा चैप्टर के सदर थे। गत तीन वर्षों से इन्हें कैंसर का रोग था, किन्तु इसके बावजूद सदेव अपनी बीमारी पर दूसरों की पीड़ा को प्राथमिकता दी और हर समय सेवा के लिए तय्यार रहते थे। रोगियों से सहानुभूति, स्नेह एवं दुर्बलों का बिना पैसे लिए उपचार आपका विशेष गुण था। निर्धन रोगियों को फ़्री इलाज के अतिरिक्त वापसी का किराया भी दे देते थे, उनके कुछ टेस्ट फ़्री करवाते और उनके पैसे वापस कर देते। आर्थिक रूप से दुर्बल बालिकाओं की शादियों के लिए प्रयत्न करते।

शहीद मरहूम की माता श्री अम्तुल हई साहिबा कहती हैं कि मरहूम माता-पिता का अत्यधिक सम्मान करने वाले थे। बचपन से अत्यधिक विशेषताओं के स्वामी थे, अपने काम से काम रखने वाले, ख़िलाफ़त से अत्यंत प्रेम था, आर्थिक लेन देन का पूरा हिसाब रखते थे, परिवार के सब लोगों को जोड़ कर रखा हुआ था। उनकी पत्नी अमतुल नूर साहिबा कहती हैं कि बच्चों को सदा जमाअत के निज़ाम से जुड़ने का आग्रह करते, ख़ुतबात नियमबद्ध रूप से सुनते और उसमें से विशेष बिन्दु अपनी डायरी में नोट करते। चन्दों को अदा करने में एक उदाहरण थे, शहादत के समय उनका वसिय्यत का चन्दा 2025 तक पूरा अदा था। उनकी बेटी साईमा कहती हैं कि अत्यधिक प्यारे पिता थे, मेरी शादी पर मुझे एक ही उपदेश दिया कि बेटा! अपनी ससुराल जाकर सदेव जमाअत के निज़ाम से जुड़ी रहना, यदि किसी समय कोई जमाअती सेवा करने का सौभाग्य मिले तो कभी इन्कार न करना।

एक बहू कहती हैं- अल्लाह पर भरोसा करने पर बहुत ज़ोर देते थे। जब भी किसी मामले में मार्गदर्शन करने का निवेदन किया तो बात दुआ से शुरू करते और दुआ पर ही पूरी करते। उनकी बहिन कहती हैं कि जमाअत के प्रति विरोधी गतिविधियों के कारण अत्यंत दुखी रहते, रातों को उठ उठ कर नफ़ल पढ़ना, तहज्जुद पढ़ना प्रतिदिन का नियम था।

अमीर साहब ज़िला सरगोधा कहते हैं- लोगों के लिए पूर्णतया लाभप्रद होने के अतिरिक्त विनयता एवं विनम्रता का गुण इनमें विशेष था। जमाअती ओहदेदारों का बड़ा सम्मान करते थे। वहाँ के मुरब्बी सिलसिला कहते हैं कि हमारा अत्यन्त प्यारा, मानवता का सेवक, दया एवं करूणा की मूर्ति, लाखों लोगों का मसीहा, फ़रिश्ते के रूप में इंसान, हम से जुदा हो गया। शहीद मरहूम दरवेश रूपी इंसान थे, जीवन का हर आयाम अदित्तीय था।

विरोधियों ने पूरे ज़िले में इनके विरुद्ध पर्चे भी बांटे थे और इस तरह टार्गेट किए जाने वाले अहमदियों की उन विरोधियों ने सूची भी बनाई थी और उसमें डाक्टर साहब का नाम सबसे ऊपर था। एक मौलवी अकरम तूफ़ानी ने इनकी वैध हत्या किए जाने का फ़तवा भी दिया हुआ था, यही नहीं बल्कि यह फ़तवा लोगों में फैलाया भी गया था, परन्तु फिर भी शासन ने कोई क़दम नहीं उठाया। अल्लाह तआला जल्द इनकी पकड़ के सामान करे, क्यूंकि देश को बचाने के लिए आवश्यक है कि अब इनसे छुटकारा प्राप्त किया जाए। ये तथाकथित धार्मिक लोग जो धर्म के नाम पर आतंक फैला रहे हैं, ये लोग देश का विनाश करने पर तुले हुए हैं। हमारी प्रार्थनाएं तो अल्लाह तआला की ओर हैं और उसका हक़ अदा करने की ओर हमें पूरा ध्यान रखना चाहिए। अल्लाह तआला शहीद मरहूम के स्तर बुलंद फ़रमाए, इनके परिजनों को धैर्य एवं साहस प्रदान करे, इनकी वालिदा दीर्ध आयु हैं, अल्लाह तआला उनके दुःख को हल्का करे, इनकी बीवी और बच्चे, अल्लाह तआला सबको अपनी सुरक्षा एवं शरण में रखे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब- 18001032131